AASHIQN KA SAFARE MADEENA
(HINDI BAYAAN)

आशिक़ों का सफ़रे मदीना

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

आ़शिक़ो का सफ़रे मदीना

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूंकि येह ह़ाज़िरी का दिन है कि इस में फ़िरिश्ते ह़ाज़िर होते हैं और जो शख़्स भी मुझ पर दुरूद पढ़ता है उस का दुरूद मेरी बारगाह में पेश किया जाता है । रावी फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : क्या विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी ? प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के जिस्मों को खाना ह़राम कर दिया है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़िन्दा हैं, उन्हें रोज़ी दी जाती है ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانی ج٦ ص١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

---

1 . . . ابنِ ماجہ، کتاب ماجاء فی الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ، ۲/۲۹۱، حدیث: ۱۶۳۷

www.dawateislami.net

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें :

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ा़तिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب، اُذْکُرُوااللّٰہ، تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा। ۞ देख कर बयान करूंगा। ۞ पारह 14 सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَةً "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा। ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा। ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा। ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा। ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ा़तिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ माहे जुल हिज्जतुल ह़राम अपनी बरकतें लुटा रहा है, येह वोह मुबारक अय्याम हैं कि जिन में लाखों खुश क़िस्मत आ़ज़िमीने ह़ज, ह़ज की सआ़दत पा कर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की ज़ियारत से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हैं, यक़ीनन ज़िक्रे मदीना आ़शिक़ाने रसूल के लिये बाइ़से तस्कीने दिलो जान है, उ़श्शाक़े मदीना इस की फ़ुरक़त (या'नी जुदाई) में तड़पते और ज़ियारत के बेह़द मुश्ताक़ रहते हैं । दुन्या की जितनी ज़बानों में जिस क़दर क़सीदे मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के हिज्रो फ़िराक़ (या'नी जुदाई) और इस के दीदार की तमन्ना में पढ़े गए, उतने दुन्या के किसी और शहर या ख़ित़्ते (या'नी सर ज़मीन) के लिये नहीं पढ़े गए, जिसे एक बार भी मदीने का दीदार हो जाता है वोह अपने आप को बख़्त बेदार (खुश क़िस्मत) समझता और मदीने में गुज़रे हुवे ह़सीन लम्ह़ात को हमेशा के लिये यादगार क़रार देता है । किसी आ़शिक़े रसूल ने मदीने की पुर नूर फ़ज़ाओं में गुज़री हुई साअ़तों को याद करते हुवे क्या ख़ूब कहा है कि

वोही साअ़तें थीं सुरूर की, वोही दिन थे ह़ासिले ज़िन्दगी

ब हुज़ूरे शाफ़ेए उम्मतां मेरी जिन दिनों त़लबी रही

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का सफ़रे मदीना

आ़शिक़े माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने दूसरे सफ़रे ह़ज में मनासिके ह़ज (या'नी अरकाने ह़ज) अदा करने के बा'द शदीद अ़लील (या'नी सख़्त बीमार) हो गए मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इमतिदादे मरज़ (या'नी बीमारी के त़वील हो जाने) में मुझे ज़ियादा फ़िक्र, ह़ाज़िरिये सरकारे आ'ज़म (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की थी । जब बुख़ार को इमतिदाद (या'नी तूल) पकड़ता देखा, मैं ने उसी ह़ालत में क़स्दे ह़ाज़िरी किया, येह उ़लमा मानेअ़ हुवे (या'नी रोकने लगे) । अव्वल तो येह फ़रमाया

www.dawateislami.net

कि ह़ालत तो तुम्हारी येह है और सफ़र त़वील ! मैं ने अ़र्ज़ की : ''अगर सच पूछिये तो ह़ाज़िरी का अस्ले मक़्सूद ज़ियारते त़यबा है, दोनों बार इसी निय्यत से घर से चला, مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अगर येह न हो तो ह़ज का कुछ लुत़्फ़ (या'नी मज़ा) नहीं ।'' उन्हों ने फिर इसरार और मेरी ह़ालत का इश्आ़र किया (या'नी मुझे मेरी ह़ालत याद दिलाई) । मैं ने ह़दीस पढ़ी : مَنْ حَجَّ وَلَمْ يَزُرْنِیْ فَقَدْ جَفَانِیْ[1] ''या'नी जिस ने ह़ज किया और मेरी (क़ब्र की) ज़ियारत न की उस ने मुझ पर जफ़ा की'' फ़रमाया : तुम एक बार तो ज़ियारत कर चुके हो । मैं ने कहा : मेरे नज़्दीक ह़दीस का येह मत़लब नहीं कि उ़म्र में कितने ही ह़ज करे ज़ियारत एक बार काफ़ी है बल्कि हर ह़ज के साथ ज़ियारत ज़रूर (या'नी लाज़िमी) है, अब आप दुआ़ फ़रमाइये कि मैं सरकार (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तक पहुंच लूं । रौज़ए अक़्दस पर एक निगाह पड़ जाए अगर्चे उसी वक़्त दम निकल जाए ।[2]

उस के त़ुफ़ैल ह़ज भी ख़ुदा ने करा दिये अस्ले मुराद ह़ाज़िरी उस पाक दर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 202)

चलूं दुन्या से मैं इस शान से ऐ काश ! या अल्लाह
शहे अबरार की चौखट पे सर हो मेरा ख़म मौला
सुन्हरी जालियों के सामने ऐ काश ! ऐसा हो
निकल जाए रसूले पाक के जल्वों में दम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि आ़शिक़ों के इमाम आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे फ़ाइज़ुल अन्वार की ह़ाज़िरी के लिये किस क़दर बे क़रार रहा करते थे,

1 ... كشف الخفاء، حرف الميم، ۲/۲۱۸، حديث: ۲۴۵۸

2 ....आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें, स. 145

www.dawateislami.net

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ चाहते तो कुछ मुद्दत के बा'द इस सआदत से मुशर्रफ़ हो जाते मगर इश्क़े रसूल चूंकि आप का सरमाया और हाज़िरिये बारगाहे रसूल आप की मन्ज़िले मक़्सूद थी, लिहाज़ा सख़्त अ़लालत (या'नी बीमारी) भी आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को दरे रसूल की हाज़िरी से न रोक सकी, अल ग़रज़ आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ पर एक ही धुन सुवार थी कि बस किसी त़रह़ रौज़ए रसूल की एक झलक देख लूं और अपनी आंखें ठन्डी कर लूं, फिर भले मेरी जान भी चली जाए तो मुझे कोई परवा न होगी नीज़ आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का येह जुम्ला भी तारीख़ में सुन्हरी हुरूफ़ से लिखने के क़ाबिल है कि "**अगर सच पूछिये तो ह़ाज़िरी का अस्ले मक़्सूद ज़ियारते त़यबा है, दोनों बार इसी निय्यत से घर से चला, مَعَاذَاللّٰہ अगर येह न हो तो ह़ज का कुछ लुत्फ़ नहीं।**"

ऐ काश ! हमें भी हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़ीक़ी इश्क़ और मदीने की सच्ची तड़प नसीब हो जाए, यक़ीनन जिन के दिल में मदीने जाने का शौक़ रहता है, उन पर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़रूर करम होता है और अस्बाब व वसाइल न होने के बा वुजूद भी उन्हें हैरत अंगेज़ त़ौर पर ह़ाज़िरी की सआदत नसीब हो जाती है, बल्कि अगर यूं कहा जाए तो शायद ग़लत़ न होगा कि मक्कए मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا वोह मुक़द्दस मक़ामात हैं जहां लोग ख़ुद नहीं जाते बल्कि बुलाए जाते हैं, आइये अब मदीने की तड़प दिल में पैदा करने के लिये मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا और रौज़ए अक़्दस की ह़ाज़िरी के फ़ज़ाइल से मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

मदीना लोगों को पाक व साफ़ कर देता है

﴾1﴿ اَلۡمَدِیۡنَۃُ تَنۡفِی النَّاسَ کَمَا یَنۡفِی الۡکِیۡرُ خَبَثَ الۡحَدِیۡدِ या'नी मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا लोगों को यूं पाक व साफ़ कर देता है जैसे भट्टी लोहे का ज़ंग साफ़ कर देती है।[1]

---

1 . . . مسلم، کتاب الحج، باب المدینہ تنفی شرارھا، ص۷۱۷، حدیث: ۱۳۸۲

www.dawateislami.net

शफ़ाअ़त का परवाना

﴾2﴿ जो शख़्स मेरी (क़ब्र की) ज़ियारत के लिये आए और मेरी ज़ियारत के सिवा उस का कोई मक़्सद न हो तो मुझ पर ह़क़ है कि मैं क़ियामत के रोज़ उस की शफ़ाअ़त करूं।[1]

मेरी क़ब्र की ज़ियारत करना मेरी ही ज़ियारत करना है

﴾3﴿ مَنْ حَجَّ فَزَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ وَفَاتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ जिस ने मेरी वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द ह़ज किया फिर मेरी क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की तो गोया उस ने मेरी ह़यात ही में मेरी ज़ियारत की।[2]

ज़ियारते रौज़ए अक़्दस के दस फ़वाइद

मुबल्लिग़े इस्लाम शैख़ शोऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अक़्दस की ज़ियारत करने वाले के लिये दस करामात या'नी इ़ज़्ज़तें हैं : (1) वोह बुलन्द मर्तबा होगा (2) हुसूले मक़्सद में कामयाब होगा (3) उस की ह़ाजत पूरी होगी (4) उसे अ़तिय्यात ख़र्च करने की तौफ़ीक़ मिलेगी (5) वोह हलाकत व बरबादी से अम्न में रहेगा (6) उ़यूब व नक़ाइस से पाक होगा (7) उस की मुश्किलात आसान होंगी (8) ह़ादिसात से उस की ह़िफ़ाज़त होगी (9) उसे आख़िरत में अच्छा बदला मिलेगा और (10) मशरिक़ो मग़रिब के रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत मिलेगी।[3]

या रब ! तेरे मह़बूब का जल्वा नज़र आए उस नूरे मुजस्सम का सरापा नज़र आए
ऐ काश ! कभी ऐसा भी हो ख़्वाब में मेरे हूं जिस की ग़ुलामी में वोह आक़ा नज़र आए

---

1 ... معجم کبیر، سالم عن ابنِ عمر، ۱۲/۲۲۵، حدیث: ۱۳۱۴۹

2 ... دارِقُطنی، کتاب الحج، باب المواقیت، ۲/۳۵۱، حدیث: ۲۶۶۷

3 ... الروض الفائق، المجلس الثانی والخمسون: فی زیارۃ النبی، ص۳۰۷-۳۰۸ ملخصاً

www.dawateislami.net

ताबिन्दा मुक़द्दर का सितारा नज़र आए जब आंख खुले गुम्बदे ख़ज़रा नज़र आए
जिस दर का बनाया है गदा मुझ को इलाही उस दर पे कभी काश ! येह मंगता नज़र आए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आप ने कि मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी किस क़दर बाइसे सआ़दत है कि इस की बरकत से गुनाह धुल जाते हैं, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होती है और सब से बढ़ कर येह कि जिस ख़ुश नसीब को क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत नसीब हो जाए तो येह ऐसा ही है जैसे उसे ख़ुद हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो गई, बहर ह़ाल हमें मदीने की याद में हर दम तड़पते हुवे अपने बुलावे का मुन्तज़िर रहना चाहिये और सलातो सलाम की कसरत करने के साथ साथ हर साल ह़ज के पुर बहार मौसिम में आ़ज़िमीने ह़ज व ज़ाइरीने मदीना के ज़रीए़ ख़ुसूसी तौ़र पर अपना सलाम बारगाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पहुंचाना चाहिये ।

सलाम भेजने वालों को जवाबे सलाम

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो कोई मुझ पर सलाम भेजता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी रूह़ को मुझ में लौटा देता है यहां तक कि मैं उस के सलाम का जवाब देता हूं ।(1)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं कि यहां रूह़ से मुराद तवज्जोह है न वोह जान जिस से ज़िन्दगी क़ाइम है, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तो ब ह़याते दाइमी (हमेशा की ज़िन्दगी के साथ) ज़िन्दा हैं । इस ह़दीस का येह मत़लब नहीं कि मैं वैसे तो बे जान रहता हूं किसी के दुरूद पढ़ने पर ज़िन्दा हो कर जवाब देता रहता हूं वरना हर आन हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर लाखों दुरूद पढ़े जाते हैं तो लाज़िम आएगा कि हर आन लाखों बार आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की रूह़

1 ... ابوداود، کتاب المناسک، باب زیارۃ القبور، ۲/۳۱۵، حدیث: ۲۰۴۱

www.dawateislami.net

निकलती और दाखि़ल होती रहे । ख़याल रहे कि हु़जू़र (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) एक आन में बे शुमार दुरूद ख़्वानों की त़रफ़ यक्सां (या'नी बराबर) तवज्जोह रखते हैं, सब के सलाम का जवाब देते हैं जैसे सूरज बयक वक़्त सारे आ़लम पर तवज्जोह कर लेता है, ऐसे (ही) आस्माने नबुव्वत के सूरज एक वक़्त में सब का दुरूदो सलाम सुन भी लेते हैं और उस का जवाब भी देते हैं, लेकिन इस में आप (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को कोई तक्लीफ़ भी मह़सूस नहीं होती, क्यूं न हो कि मज़्हरे ज़ाते किब्रिया हैं, (जैसे) रब तआ़ला बयक वक़्त सब की दुआ़एं सुनता है (वैसे ही उस के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की अ़त़ा से एक ही वक़्त में बे शुमार आ़शिक़ों का दुरूदो सलाम सुनते हैं) ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आइये ! अब ह़ाज़िरिये मदीना और सफ़रे मदीना से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن के चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त और इन से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं । चुनान्चे,

सह़ाबिये रसूल का अ़क़ीदा

मरवान अपने ज़मानए तसल्लुत़ (या'नी ज़मानए हु़कूमत) में एक दिन कहीं चला जा रहा था कि उस ने किसी शख़्स को देखा कि वोह हु़ज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर अपना चेहरा रखे हुवे है । मरवान ने कहा : क्या तुम्हें मा'लूम है कि तुम क्या कर रहे हो ? जब वोह मरवान की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे तो पता चला कि वोह तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, उन्हों ने फ़रमाया : हां, मैं किसी पथ्थर के पास नहीं आया, मैं तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हु़ज़ूर ह़ाज़िर हुवा हूं मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुन रखा है कि

1...मिरआतुल मनाजीह़, 2/101

www.dawateislami.net

दीन पर उस वक़्त आंसू न बहाना जब उस की ज़िम्मेदारी लाइक़ व अहल के पास हो, दीन पर उस वक़्त आंसू बहाना जब उस की ज़िम्मेदारी ना लाइक़ व ना अहल के पास हो।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बे पनाह महब्बत किया करते थे और उन का येह अ़क़ीदा था कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा हैं, येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने मरवान को इन्तिहाई खरा जवाब दिया कि मैं किसी पथ्थर के पास नहीं आया जो कि बे जान होता है न सुन सकता है न बोल सकता है बल्कि मैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुवा हूं जो आज भी अपनी क़ब्रे अन्वर में ह़याते बा कमाल के साथ मुत्तसिफ़ हैं, लिहाज़ा हमें भी शैत़ानी वस्वसों से बचते हुवे इसी अ़क़ीदे पर साबित क़दम रहना चाहिये कि न सिर्फ़ सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बल्कि तमाम के तमाम अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं जैसा कि

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ या'नी अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं (और) नमाज़ें (भी) अदा फ़रमाते हैं।[2] एक और ह़दीसे पाक में इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللهِ حَيٌّ يُّرْزَقُ या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खाना, ज़मीन पर ह़राम कर दिया है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़िन्दा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं।[3]

---

1 ...مسند احمد، حديث ابی ايوب الانصاری، ۱۴۸/۹، حديث:۲۳۶۴۶

2 ...مسند ابی يعلٰی، مسند انس بن مالک، ۲۱۶/۳، حديث:۳۴۱۲

3 ...ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب: ذكر وفاته ودفنه، ۲۹۱/۲، حديث:۱۶۳۷

www.dawateislami.net

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 158)

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कु़त़्बे वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का सफ़रे मदीना

इमामुल आ़रिफ़ीन, ग़ौसे ज़मां ह़ज़रते सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब ह़ज से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा (زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعْظِیْمًا) रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िर हुवे तो अ़रबी में येह दो अश्आ़र पढ़े :

فِیْ حَالَۃِ الْبُعْدِ رُوْحِیْ کُنْتُ اُرْسِلُھَا تُقَبِّلُ الْاَرْضَ عَنِّیْ فَھِیَ نَائِبَتِیْ
وَھٰذِہٖ دَوْلَۃُ الْاَشْبَاحِ قَدْ حَضَرَتْ فَامْدُدْ یَمِیْنَکَ کَیْ تَحْظٰی بِھَا شَفَتِیْ

“या’नी दूरी की ह़ालत में, मैं अपनी रूह़ को ख़िदमते अक़्दस में भेजा करता था तो वोह मेरी नाइब बन कर आस्तानए मुबारका को चूमा करती थी और अब बदन के साथ ह़ाज़िर हो कर मिलने की बारी आई है तो अपना दस्ते मुबारक दराज़ फ़रमाइये ताकि मेरे होंट दस्तबोसी का शरफ़ ह़ासिल कर सकें।” जूंही येह अश्आ़र ख़त्म हुवे क़ब्रे मुनव्वर से दस्ते मुबारक ज़ाहिर हुवा और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दस्तबोसी की सआ़दत ह़ासिल कर ली।(1)

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़ह़ा तेरा “नहीं” सुनता ही नही मांगने वाला तेरा

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाके़ई हमारे अकाबिर व बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن मदीने की ह़ाज़िरी के लिये बहुत बेचैन रहा करते थे जैसा कि इमामुल आ़रिफ़ीन ह़ज़रते सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में हम ने सुना कि उन पर यादे त़यबा और इ़श्क़े रसूल का ग़लबा रहा

1 ... الحاوی للفتاوی، کتاب البعث، تنویر الحلک فی امکان رؤیۃ النبی والملک، ۲/۳۱۴

www.dawateislami.net

करता था बल्कि आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ तस्कीने इश्क़ की ख़ाति़र जिस्मानी तौ़र पर न सही पर रूह़ानी तौ़र पर प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरे अक्दस की चोखट को चूम आया करते थे, मगर इस के बा वुजूद आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जिस्मो रूह़ के साथ दियारे मह़बूब से बुलावे के मुन्तज़िर रहा करते थे। फिर जब उन की क़िस्मत चमकी, इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुई और बारगाहे रिसालत से उन्हें बुलावा आया तो जिस्मो रूह़ के साथ जानिबे मदीना रवाना हुवे और आस्तानए आ़लिय्या में पहुंच कर अ़क़ीदत से भरपूर अशआ़र बारगाहे अक्दस में हदिय्यतन पेश किये, करम बालाए करम हुवा कि बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में आ़शिक़े ज़ार के अश्आ़र दरजए क़बूलिय्यत ह़ासिल कर गए, रह़मते मुस्त़फ़ा को जोश आया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ब्रे अन्वर से अपना दस्ते अत़हर बाहर निकाल कर अपने सच्चे आ़शिक़ की दस्तबोसी की देरीना (دے۔رِی۔نہ या'नी पुरानी) ख़्वाहिश को हाथों हाथ पूरा फ़रमा दिया।

लब वाहें आंखें बन्द हैं फैली हैं झोलियां कितने मज़े की भीक तेरे पाक दर की है
मंगता का हाथ उठते ही दाता की दैन थी दूरी क़बूलो अ़र्ज़ में बस हाथ भर की है

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अमीरे मिल्लत का सफ़रे मदीना

पंजाब (पाकिस्तान) के मश्हूर आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग अमीरे मिल्लत ह़ज़रते मौलाना पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह मुह़द्दिसे अ़लीपूरी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا गए तो उन के किसी मुरीद ने मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا के एक कुत्ते को इत्तिफ़ाक़न ढेला (ڈھے۔لا) मार दिया जिस की चोट से कुत्ता चीख़ा, ह़ज़रते अमीरे मिल्लत رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से किसी ने कह दिया कि आप के फ़ुलां मुरीद ने मदीने शरीफ़ के एक कुत्ते को मारा है। येह सुन कर आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बे चैन हो गए और अपने मुरीदों को हुक्म दिया कि फ़ौरन उस कुत्ते को तलाश कर के यहां लाओ चुनान्चे, कुत्ता लाया गया, ह़ज़रते अमीरे मिल्लत رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ उठे और रोते

www.dawateislami.net

हुवे उस कुत्ते से मुख़ात़ब हो कर कहने लगे : ऐ दियारे ह़बीब के रहने वाले ! लिल्लाह (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वासित़े) मेरे मुरीद की इस लग़ज़िश (या'नी ग़लत़ी) को मुआ़फ़ कर दे । फिर भुना हुवा गोश्त व दूध मंगवाया और उसे खिलाया पिलाया, फिर उस से कहा : जमाअ़त अ़ली शाह तुझ से मुआ़फ़ी चाहता है, ख़ुदारा ! इसे मुआ़फ़ कर देना ।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के जानवरों से भी किस क़दर मह़ब्बत फ़रमाते थे, उन्हें हरगिज़ येह गवारा (या'नी मन्ज़ूर) न था कि कोई दियारे मह़बूब के कुत्तों के साथ भी ना रवा (या'नी ना मुनासिब) सुलूक करे और उन्हें अज़िय्यत पहुंचाए । येही वज्ह है कि अमीरे मिल्लत पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जैसे ही येह मा'लूम हुवा कि मेरे किसी मुरीद ने इस मुक़द्दस शहर के एक कुत्ते को ढेला (ڈھیلا) मारा है तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का चैनो क़रार जाता रहा, बे क़रारी के आ़लम में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़ौरन हुक्म सादिर (या'नी जारी) फ़रमाया कि किसी भी सूरत में उस कुत्ते को ढूंडो और मेरे पास लाओ चुनान्चे, जब उस कुत्ते को लाया गया तो देखने वालों ने देखा कि मश्हूरे ज़माना आ़शिक़े रसूल, लाखों मुरीदीन के पेश्वा और एक वलिय्ये कामिल ने गिर्या व ज़ारी करते हुवे उस कुत्ते से न सिर्फ़ अपने मुरीद की लग़ज़िश (या'नी ग़लत़ी) की मुआ़फ़ी मांगी बल्कि उ़म्दा ग़िज़ाओं से उस की ख़ैर ख़्वाही और दिलजूई भी फ़रमाई नीज़ जब दिल मुत़मइन न हुवा तो एक बार फिर उस से मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त करने लगे ।

1....सुन्नी उ़लमा की ह़िकायात नम्बर : 37, स. 211 मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

वस्वसा

मुमकिन है कि किसी के ज़ेहन में येह वस्वसा आए कि कुत्ता तो ब ज़ाहिर एक मा'मूली जानवर है, लिहाज़ा इस के साथ उस त़रह़ का बरताव (या'नी सुलूक) करना और उस के आगे गिड़ गिड़ाते हुवे मुआफ़ी मांगना एक वलिय्ये कामिल को और वोह भी सफ़रे मदीना जैसे पाकीज़ा व मुक़द्दस लम्ह़ात के मौक़अ़ पर हरगिज़ हरगिज़ ज़ैब नहीं देता।

जवाबे वस्वसा

याद रखिये ! कुत्ता अगर्चे ब ज़ाहिर एक मा'मूली जानवर है मगर उसे या किसी भी जानवर को बिला वज्ह मारना मन्अ़ है जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द 3 सफ़ह़ा 660 पर है **: "बिला वज्ह जानवर को न मारे और सर या चेहरे पर किसी ह़ालत में हरगिज़ न मारे कि येह बिल इजमाअ़ नाजाइज़ है।"** रहा एक वलिय्ये कामिल का एक कुत्ते के साथ ह़ुस्ने बरताव (या'नी अच्छे सुलूक) से पेश आना, तो यहां येह बात ज़ेह्न नशीन रखना निहायत ज़रूरी है कि जब किसी मा'मूली चीज़ को किसी नबी, वली या किसी मुक़द्दस चीज़ की सोह़बत या उन से निस्बत ह़ासिल हो जाती है तो इस सोह़बत व निस्बत की बरकत से वोह मा'मूली चीज़ मा'मूली नहीं रहती बल्कि ग़ैर मा'मूली अहम और अनमोल हो जाया करती है जैसा कि क़ित़मीर अगर्चे सगे अस्ह़ाबे कह्फ़ (या'नी अस्ह़ाबे कह्फ़ का कुत्ता) था मगर **अल्लाह** वालों की सोह़बत व निस्बत की बदौलत, अहम्मिय्यत ह़ासिल कर गया नीज़ इसी बिना पर क़ुरआने करीम में उस का तज़किरा भी मौजूद है और वोह जन्नत में भी जाएगा जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه तह़रीर फ़रमाते हैं : चन्द जानवर जन्नत में जाएंगे, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी क़स्वा, अस्ह़ाबे कह्फ़ का कुत्ता, ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْهِ السَّلَام की ऊंटनी (और) ह़ज़रते ईसा عَلَیْهِ السَّلَام का दराज़ गोश (या'नी गधा)।[1]

1....मिरआतुल मनाजीह़, 7/501

www.dawateislami.net

लिहाज़ा जिस कुत्ते को अमीरे मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुरीद ने ढेला (ڈھےلا) मारा था वोह भी कोई आ़म कुत्ता न था बल्कि उसे ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यारे शहर मदीनए मुनव्वरा से निस्बत ह़ासिल थी वोह दियारे मह़बूब के गली कूचों से तअ़ल्लुक़ रखने वाला था, इसी वज्ह से अमीरे मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस कुत्ते का अदबो एह़तिराम बजा लाए और उस से मुआ़फ़ी के त़लबगार हुवे, बहर ह़ाल येह इश्क़ो मह़ब्बत की बातें हैं और इश्क़ो मह़ब्बत वाले ही इन्हें समझ सकते हैं।

आप की गलियों के कुत्तों पे तसद्दुक़ जाऊं कि मदीने के वोह कूचों में फिरा करते हैं

आप की गलियों के कुत्ते मुझ से अच्छे रहे है सुकूं उन को मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ऐ दर्द तेरी जगह तो मेरे दिल में है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सिने 1390 हिजरी में ह़ज व ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल की, इस ज़िम्न में मदीने का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में फिसल कर गिर गया, दाहिने हाथ की कलाई की हड्डी टूट गई, दर्द ज़ियादा हुवा तो मैं ने उसे बोसा दे कर कहा : ऐ मदीने के दर्द ! तेरी जगह मेरे दिल में है तू तो मुझे यार के दरवाज़े से मिला है।

तेरा दर्द मेरा दरमां तेरा ग़म मेरी ख़ुशी है मुझे दर्द देने वाले तेरी बन्दा परवरी है

(फ़रमाते हैं कि) दर्द तो उसी वक़्त से ग़ाइब हो गया मगर हाथ काम नहीं करता था, सत्तरह[17] दिन के बाद मुस्तश्फ़ा मलिक (या'नी शाही अस्पताल) में एक्सरे (X-Ray) लिया तो हड्डी के दो टुकड़े आए, जिन में क़दरे फ़ासिला है मगर हम ने इ़लाज नहीं कराया, फिर आहिस्ता आहिस्ता हाथ काम भी करने लगा, मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के उस अस्पताल के डॉक्टर मुह़म्मद इस्माई़ल ने कहा कि येह ख़ास करिश्मा हुवा है कि येह हाथ त़िब्बी लिह़ाज़ से ह़रकत भी नहीं कर सकता, वोह एक्सरे (X-Ray) मेरे पास

है, हड्डी अब तक टूटी हुई है, इस टूटे हाथ से तफ़्सीर लिख रहा हूं, मैं ने अपने इस टूटे हुवे हाथ का इ़लाज सिर्फ़ येह किया कि आस्तानए आ़लिय्या पर खड़े हो कर अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर ! मेरा हाथ टूट गया है, ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की टूटी पिन्डली जोड़ने वाले ! ऐ मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का टूटा बाज़ू जोड़ देने वाले ! मेरा टूटा हाथ जोड़ दो ।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का कैसा मदनी ज़ेह्न था कि मदीनए मुनव्वरा में पेश आने वाले मसाइबो आलाम को न सिर्फ़ ख़न्दा पेशानी से सह लिया करते थे बल्कि उन्हें अपने लिये बाइ़से सआ़दत तसव्वुर किया करते थे जैसा कि बयान कर्दा वाक़िए़ से साफ़ ज़ाहिर है कि मुफ़्ती साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की कलाई की हड्डी टूट गई मगर आप के सब्रो इस्तिक़्लाल और सआ़दत मन्दी का येह ह़ाल था कि आहो बुका और चीख़ो पुकार करने के बजाए इस के सबब होने वाले दर्द को अपने लिये तमग़ा (या'नी इन्आ़मी अ़लामत) समझ कर क़बूल कर लिया कि येह तो मेरे लिये दियारे नबी की एक उ़म्दा सोग़ात है । बहर ह़ाल येह उन्ही मुबारक हस्तियों का ख़ास्सा था कि उन्हें राहे मदीना का कांटा भी फूल मह़सूस होता था, ऐ काश ! हमें भी इन बुज़ुर्गों का सदक़ा नसीब हो जाए और ऐ काश ! हम भी जब आज़िमे मदीना हों तो सफ़रे मदीना की ख़ूब ख़ूब बरकतें पाएं और इस दौरान मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا और मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में इस क़दर फ़ना हो जाएं कि इस राह में आने वाले मसाइबो आलाम हमारे लिये न सिर्फ़ राह़तो इत़्मीनान का ज़रीआ़ हों बल्कि ग़मे दुन्या व ग़मे माल से नजात और हमारे गुनाहों की बख़्शिश का सबब बन जाएं । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1....तफ़्सीरे नईमी, 9/388

www.dawateislami.net

आइये ! अब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सफ़रे मदीना के पुरकैफ़ व निराले अन्दाज़ के बारे में सुनते हैं क्यूंकि बिला शुबा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी इ़श्क़े रसूल के ऐसे दरजे पर फ़ाइज़ हैं कि जिस की वज्ह से आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शुमार भी आ़शिक़ाने रसूल की सफ़े अव्वल में होता है, अमीरे अहले सुन्नत के सफ़रे मदीना के अह़वाल सुन कर यक़ीनन हमें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा,

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सफ़रे मदीना

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को कई मरतबा सफ़रे ह़ज व सफ़रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल हुई, जिन में मजमूई त़ौर पर जो कैफ़िय्यत रही उसे कमा ह़क़्क़ुहू तो बयान नहीं किया जा सकता अलबत्ता आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के एक सफ़रे मदीना के मुख़्तसर अह़वाल सुनते हैं चुनान्चे, जब मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की त़रफ़ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की रवानगी की मुबारक घड़ी आई तो एरपोर्ट पर आ़शिक़ाने रसूल का एक जम्मे ग़फ़ीर (या'नी बहुत बड़ा हुजूम) आप को अल वदाअ़ कहने के लिये मौजूद था, मदीने के दीवानों ने आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को झुरमट (या'नी ह़ल्क़े) में ले कर ना'तें पढ़ना शुरूअ़ कर दीं । सोज़ो गुदाज़ में डूबी हुई ना'तों ने उ़श्शाक़ की आतशे इ़श्क़ को मज़ीद भड़का दिया । ग़मे मदीना में उठने वाली आहों और सिसकियों से फ़ज़ा सोगवार हुई जा रही थी, ख़ुद आ़शिक़े मदीना, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कैफ़िय्यत बड़ी अ़जीब थी । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आंखों से आंसूओं की झड़ी लगी हुई थी और आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने इन अश्आ़र के मिस्दाक़ नज़र आ रहे थे ।

आंसूओं की लड़ी बन रही हो — और आहों से फटता हो सीना
विर्दे लब हो मदीना मदीना — जब चले सूए त़यबा सफ़ीना

इ़श्क़ो उल्फ़त का येह निराला अन्दाज़ हर एक की समझ में तो आ नहीं सकता क्यूंकि ह़ाज़िरिये त़यबा के लिये जाने वाले तो उ़मूमन हंसते हुवे,

www.dawateislami.net

मुबारक बादियां वुसूल करते हुवे जाते हैं। ऐसे ज़ाइरीने मदीना का आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने एक कलाम में इस त़रह़ से मदनी ज़ेह्न बनाने की कोशिश की है :

अरे ज़ाइरे मदीना ! तू ख़ुशी से हंस रहा है ! दिले ग़मज़दा जो पाता तो कुछ और बात होती

बिल आख़िर इसी मह़विय्यत (या'नी मदीने के ख़याल में गुम हो जाने) के आ़लम में सफ़रे मदीना का आग़ाज़ हुवा, जूं जूं मन्ज़िल क़रीब आती रही, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इ़श्क़ की शिद्दत भी बढ़ती रही। उस पाक सर ज़मीन पर पहुंचते ही आप ने जूते उतार लिये। **अल्लाह** ! **अल्लाह** ! मिज़ाजे इ़श्क़े रसूल से इस क़दर आशना (या'नी जान पहचान रखने वाले) कि ख़ुद ही कलाम में फ़रमाते हैं :

पाऊं में जूता अरे मह़बूब का कूचा है येह होश कर तू होश कर ग़ाफ़िल ! मदीना आ गया

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उस पाक सर ज़मीन के आदाब का इस क़दर ख़याल रखते कि सिने 1406 हिजरी के सफ़रे ह़ज में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़बीअ़त नासाज़ थी। सख़्त नज़ला हो गया, नाक से शिद्दत के साथ पानी बह रहा था। इस के बा वुजूद आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कभी भी मदीनए पाक की सर ज़मीन पर नाक नहीं सिनकी बल्कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हर अदा से अदब का ज़ुहूर होता। जब तक मदीनए मुनव्वरा में रहे ह़त्तल इमकान गुम्बदे ख़ज़रा को पीठ न होने दी।

मदीना इस लिये अ़त्तार जानो दिल से है प्यारा कि रहते हैं मेरे आक़ा मेरे दिलबर मदीने में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ दर्दे मदीना तो कोई आ़शिक़े मदीना, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से सीखे कि जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदीने शरीफ़ से दूर होते हैं, उस वक़्त भी आप के लबों पर हर दम ज़िक्रे मदीना व ज़िक्रे शाहे मदीना जारी रहता है, मगर जब बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को सफ़रे मदीना का मुज़्दा मिलता है तो

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो जाती है, अश्कों का थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए़ उमंड आता है और गोया आप इन अश्आ़र की अ़मली तस्वीर बन जाते हैं :

मदीने का सफ़र है और मैं नमदीदा नमदीदा   जबीं अफ़सुर्दा अफ़सुर्दा बदन लर्ज़ीदा लर्ज़ीदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी आ़शिक़े मदीना, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सदक़े ग़मे मदीना की ला ज़वाल दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाए और बार बार अपने मुर्शिदे करीम के साथ सफ़रे मदीना की सआ़दत और मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस बात में कोई शक नहीं कि मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में रौज़ए रसूल के रू बरू सलाम पेश करना बहुत बड़ी सआ़दत है। ऐ काश ! हमारी ज़िन्दगी में भी वोह मुबारक लम्ह़ात आएं मगर येह भी याद रखिये कि जिसे इस दर की ह़ाज़िरी नसीब हो उस के लिये ज़रूरी है कि इस बारगाहे आ़ली के आदाब का ख़ास ख़याल रखे, क्यूंकि ज़रा सी बे एह़तियाती सख़्त मह़रूमी का सबब बन सकती है। आइये ! अब ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की लिखी हुई अ़ज़ीमुश्शान व मायानाज़ किताब ''बहारे शरीअ़त'' की रोशनी में सफ़रे मदीना और रौज़ए अक़्दस की ह़ाज़िरी के कुछ आदाब सुनते हैं चुनान्चे,

ह़ाज़िरिये बारगाह के आदाब

सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रौज़ए रसूल पर ह़ाज़िरी के आदाब बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : ❀ ह़ाज़िरी में ख़ालिस ज़ियारते अक़्दस की निय्यत करो ❀ ह़ज अगर फ़र्ज़ है तो ह़ज कर के मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हो। हां ! अगर मदीनए त़य्यिबा रास्ते में हो तो बिग़ैर ज़ियारत ह़ज को जाना सख़्त

मह़रूमी व क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) है और इस ह़ाज़िरी को क़बूले ह़ज व सआ़दते दीनी व दुन्यवी के लिये ज़रीआ़ व वसीला क़रार दे और अगर ह़ज नफ़्ल हो तो इख़्तियार है कि पहले ह़ज से पाक साफ़ हो कर मह़बूब के दरबार में ह़ाज़िर हो या सरकार (या'नी बारगाहे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में पहले ह़ाज़िरी दे कर (इस ह़ाज़िरी को) ह़ज की मक़्बूलिय्यत व नूरानिय्यत के लिये वसीला करे ❀ रास्ते भर दुरूदो ज़िक्र शरीफ़ में डूब जाओ और जिस क़दर मदीनए त़य्यिबा क़रीब आता जाए, शौक़ो ज़ौक़ ज़ियादा होता जाए ❀ जब ह़रमे मदीना आए बेहतर येह कि पियादा (या'नी पैदल) हो लो, रोते, सर झुकाए, आंखें नीची किये, दुरूद शरीफ़ की और कसरत करो और हो सके तो नंगे पाउं चलो।

ह़रम की ज़मीं और क़दम रख के चलना अरे सर का मौक़अ़ है औ जाने वाले !

❀ जब कुब्बए अन्वर (या'नी नूरानी गुम्बद) पर निगाह पड़े, दुरूदो सलाम की ख़ूब कसरत करो ❀ ह़ाज़िरिये मस्जिद से पहले (उन) तमाम ज़रूरिय्यात से (कि) जिन का लगाव दिल बटने का बाइ़स हो, निहायत जल्द फ़ारिग़ हो, इन के सिवा किसी बेकार बात में मश्ग़ूल न हो मअ़न (या'नी फ़ौरन) वुज़ू व मिस्वाक करो और ग़ुस्ल बेहतर, सफ़ेद पाकीज़ा कपड़े पहनो और नए बेहतर, सुर्मा और ख़ुश्बू लगाओ और मुश्क अफ़्ज़ल ❀ अब फ़ौरन आस्तानए अक़्दस की त़रफ़ निहायत ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से मुतवज्जेह हो, रोना न आए तो रोने का मुंह बनाओ और दिल को बज़ोर (या'नी कोशिश कर के) रोने पर लाओ और अपनी संग दिली से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ इल्तिजा करो ❀ जब दरे मस्जिद पर ह़ाज़िर हो, सलातो सलाम अ़र्ज़ कर के थोड़ा ठहरो जैसे सरकार से ह़ाज़िरी की इजाज़त मांगते हो, (फिर) بِسْمِ الله कह कर सीधा पाउं पहले रख कर हमातन अदब हो कर दाख़िल हो ❀ उस वक़्त जो अदबो ता'ज़ीम फ़र्ज़ है हर मुसलमान का दिल जानता है आंख, कान, ज़बान, हाथ,

www.dawateislami.net

पाउं, दिल सब ख़्याले ग़ैर से पाक करो, मस्जिदे अक़्दस के नक़्शो निगार न देखो ❀ अगर कोई ऐसा सामने आए जिस से सलाम कलाम ज़रूर हो तो जहां तक बने कतरा जाओ, वरना ज़रूरत से ज़ियादा न बढ़ो फिर भी दिल सरकार (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही की त़रफ़ हो ❀ हरगिज़ हरगिज़ मस्जिदे अक़्दस में कोई ह़र्फ़ चिल्ला कर न निकले ❀ यक़ीन जानो कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सच्ची ह़क़ीक़ी दुन्यावी जिस्मानी ह़यात से वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे वफ़ात शरीफ़ से पहले थे, उन की और तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौत सिर्फ़ वा'दए ख़ुदा की तस्दीक़ को एक आन के लिये थी ।[1] ❀ अब अदबो शौक़ में डूबे हुवे गर्दन झुकाए, आंखें नीची किये, आंसू बहाते, लरज़ते कांपते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना होते, सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम की उम्मीद रखते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैने शरीफ़ैन की त़रफ़ से सुन्हरी जालियों के रू बरू (या'नी सामने) मुवाजहा शरीफ़ में ह़ाज़िर हों कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे पुर अन्वार में रू ब क़िब्ला (रूबए क़िब्ला या'नी क़िब्ला रू) जल्वा अफ़रोज़ हैं, लिहाज़ा मुबारक क़दमों की त़रफ़ से अगर आप ह़ाज़िर होंगे तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे बेकस पनाह, बराहे रास्त आप की त़रफ़ होगी और येह बात बे ह़द ज़ौक़ अफ़ज़ा होने के साथ साथ आप के लिये सआ़दते दारैन (या'नी दुन्या व आख़िरत की सआ़दत) का सबब भी है ❀ क़िब्ले को पीठ किये कम अज़ कम चार हाथ (या'नी दो गज़) दूर नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर की त़रफ़ रुख़ कर के खड़े हों कि फ़तावा आ़लमगीरी वग़ैरा में येही अदब लिखा है कि يَقِفُ كَمَا يَقِفُ فِي الصَّلٰوةِ या'नी सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, 6/1222 ता 1223 मुलतक़त़न

www.dawateislami.net

के दरबार में इस त़रह़ खड़ा हो जिस त़रह़ नमाज़ में खड़ा होता है । याद रखें ! सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मज़ारे पुर अन्वार में ऐन ह़याते ज़ाहिरी की त़रह़ ज़िन्दा हैं और आप को या'नी ह़ाज़िरी देने वाले को भी देख रहे हैं बल्कि आप के या'नी ज़ाइर के दिल में जो ख़यालात आ रहे हैं उन पर भी मुत्त़लअ़ हैं । ख़बरदार ! जाली मुबारक को बोसा देने या हाथ लगाने से बचें कि येह ख़िलाफ़े अदब है कि हमारे हाथ इस क़ाबिल ही नहीं कि जाली मुबारक को छू सकें, लिहाजा़ चार हाथ (या'नी दो गज़) दूर ही रहें, (जरा सोचिये कि) येह शरफ़ क्या कम है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को या'नी ज़ाइर को अपने मुवाजहए अक़्दस के क़रीब बुलाया और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम अब ख़ुसूसिय्यत के साथ आप की (या'नी ज़ाइर की) त़रफ़ है ❀ अब (जब कि) दिल की त़रह़ आप का (या'नी ज़ाइर का) मुंह भी इस पाक जाली की त़रफ़ हो गया, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूबे अ़ज़ीमुश्शान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आराम गाह है, अदब और शौक़ के साथ दर्द भरी आवाज़ में इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अ़र्ज़ कीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاخَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ،اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاشَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ،اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ وَاُمَّتِكَ اَجْمَعِيْنَ

या'नी ऐ नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और बरकतें । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर सलाम । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम मख़्लूक़ से बेहतर, आप पर सलाम । ऐ गुनाहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले आप पर सलाम । आप पर, आप की आल व अस्ह़ाब पर और आप की तमाम उम्मत पर सलाम ।

मगर ख़याल रहे कि सलाम अ़र्ज़ करते हुवे आवाज़ न तो बहुत बुलन्द और सख़्त हो कि तमाम आ'माल ही ज़ाएअ़ हो जाएं और न ही बहुत आहिस्ता हो बल्कि मो'तदिल (या'नी दरमियानी) आवाज़ होनी चाहिये ।(1)

---

1 ...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2. 1/1224-1225 मुलतक़त़न व मफ़हूमन

www.dawateislami.net

महफ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से   और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो[1]

❀ हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से अपने और अपने मां बाप, पीर, उस्ताद, अवलाद, अ़ज़ीज़ों, दोस्तों और सब मुसलमानों के लिये शफ़ाअ़त मांगिये, बार बार अ़र्ज़ कीजिये : اَسْاَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَارَسُوْلَ الله (या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं आप से शफ़ाअ़त मांगता हूं) ❀ फिर अगर किसी ने अ़र्ज़े सलाम की वसिय्यत की हो तो बजा लाइये। शरअ़न इस का हुक्म है ❀ जब तक मदीनए त़य्यिबा की ह़ाज़िरी नसीब हो, एक सांस भी बेकार न जाने दीजिये, ज़रूरिय्यात के सिवा अक्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में बा त़हारत ह़ाज़िर रहिये, नमाज़ो तिलावत व दुरूद में वक़्त गुज़ारिये, दुन्या की बात किसी भी मस्जिद में न चाहिये न कि सिर्फ़ यहां ❀ मदीनए त़य्यिबा में रोज़ा नसीब हो, ख़ुसूसन गर्मी में तो क्या कहना कि इस पर वा'दए शफ़ाअ़त है ❀ यहां हर नेकी एक की पचास हज़ार (50,000) लिखी जाती है, लिहाज़ा इ़बादत में ज़ियादा कोशिश कीजिये, खाने पीने की कमी ज़रूर कीजिये और जहां तक हो सके तसद्दुक़ (या'नी सदक़ा) कीजिये ❀ रौज़ए अन्वर पर नज़र इ़बादत है जैसे का'बए मुअ़ज़्ज़मा या क़ुरआने करीम का देखना तो अदब के साथ इस की कसरत कीजिये और दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करते रहिये ❀ पंजगाना (या'नी दिन में 5 मरतबा) या कम अज़ कम सुब्ह़ो शाम मुवाजहा शरीफ़ में अ़र्ज़े सलाम के लिये ह़ाज़िर हो ❀ शहर में ख़्वाह शहर से बाहर जहां कहीं गुम्बदे मुबारक पर नज़र पड़े, फ़ौरन दस्त बस्ता (या'नी हाथ बांध कर) उधर मुंह कर के सलातो सलाम अ़र्ज़ कीजिये इस के बिग़ैर हरगिज़ न गुज़रिये कि ख़िलाफ़े अदब है ❀ क़ब्रे करीम को हरगिज़ पीठ न की जाए और ह़त्तल इमकान नमाज़ में भी ऐसी जगह न खड़े हों की पीठ करनी पड़े ❀ रौज़ए अन्वर का न त़वाफ़ कीजिये, न सजदा, न उस के सामने इतना झूकिये कि रुकूअ़ के बराबर हो। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम उन की

1...वसाइले बख़्शिश, स. 193

www.dawateislami.net

इत़ाअ़त में है (और रौज़ए अन्वर का सजदा त़वाफ़ करना या उस के आगे रुकूअ़ की ह़द तक झुकना इत़ाअ़ते रसूल के ख़िलाफ़ है) ।[1]

किताब "आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात" का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के सफ़रे मदीना व ह़ाज़िरिये मदीना से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद दिलचस्प ह़िकायात और मक्का व मदीना के बारे में ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त की मा'लूमात जानने और अपने दिल में ह़ाज़िरिये मदीना की सच्ची तड़प पैदा करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुरत्तब कर्दा किताब बनाम ''आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें'' का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस किताब में ज़ाइरीने मदीना की 51, मश्हूर आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक की 12, ह़ाजियों की 42, सालिह़ात की 6, उ़लमाए अहले सुन्नत की 17, जिन्नात की 7 और ह़ैवानात की 9 ह़िक्मत से भरपूर ह़िकायात तह़रीर फ़रमाई हैं नीज़ इस के इ़लावा भी इस में बहुत सी मा'लूमात फ़राहम की गई हैं। आप तमाम इस्लामी भाइयों से मदनी इल्तिजा है कि इस किताब को मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर न सिर्फ़ ख़ुद इस का मुत़ालआ़ कीजिये बल्कि ह़स्बे इस्तित़ाअ़त ज़ियादा ता'दाद में ह़ासिल फ़रमा कर सफ़रे मदीना की सआ़दत पाने वाले ख़ुश नसीबों में सवाब की निय्यत से मुफ़्त तक़्सीम भी फ़रमाइये । दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड किया (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊन लोड (Download) भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1-6/1225-1228 मुलतक़त़न बित्तग़य्यूरिन क़लील।

बयान का खुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने आ़शिक़ाने रसूल के सफ़रे मदीना से मुतअ़ल्लिक़ दिल कुशा व दिलरुबा वाक़िआ़त सुने, इन वाक़िआ़त से जहां येह मा'लूम हुवा कि हमारे अस्लाफ़ दरे मह़बूब की ह़ाज़िरी के लिये बे चैन रहा करते थे, वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि गुम्बदे सब्ज़ और रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत उन्हें अपनी ज़िन्दगी से भी ज़ियादा अ़ज़ीज़ थी, हमारे अकाबिर व बुज़ुर्गाने दीन को जब भी मदीने शरीफ़ की ह़ाज़िरी नसीब होती तो वोह ह़ज़रात, बारगाहे आ़ली का ऐसा एह़तिराम बजा लाते कि जिसे सुन कर अ़क़्लें दंग रह जाती हैं, अगर इस मुबारक सफ़र में कोई तक्लीफ़ पेश आती तो उसे अपने लिये बाइ़से सआ़दत समझ कर बरदाश्त कर जाते बल्कि उस दर से मिलने वाले दर्द की दवा करने के बजाए उसे मह़बूब की त़रफ़ से मिलने वाला अ़ज़ीम तोह़्फ़ा समझते, मह़बूब की बारगाह बल्कि गली कूचों से निस्बत रखने वाली मा'मूली चीज़ को भी निहायत इ़ज़्ज़तो मक़ाम देते, अगर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से बुलावे में ताख़ीर होती तो रूह़ानी त़ौर पर दरे अक़्दस के बोसे ले आते और जब ह़ाज़िरी नसीब होती तो अश्कबार आंखों से सफ़रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल करते, नीज़ उस पाक सर ज़मीन पर पहुंच कर अदब की वज्ह से सुवारी पर सुवार होने बल्कि चप्पल या जूते पहनने से भी गुरैज़ करते । यक़ीनन इन वाक़िआ़त में हम सब के लिये और बिल ख़ुसूस उन ख़ुश नसीबों के लिये बे शुमार मदनी फूल हैं जिन्हें अ़न क़रीब प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल होने वाली है, लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि ज़िन्दगी में जब भी मदीनए मुनव्वरा की ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हो, इन मदनी फूलों और बहारे शरीअ़त की रोशनी में बयान किये गए ह़ाज़िरिये बारगाह के आदाब का ख़ास ख़याल रखें । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को मुर्शिद के साथ मदीने की बा अदब ह़ाज़िरी नसीब फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त ता दमे तह़रीर 97 से ज़ियादा शो'बे क़ाइम हैं, इन्ही में से एक शो'बा "मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या" भी है जो कि शबो रोज़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ग़म ख़्वारी करने में मसरूफे़ अ़मल है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ग़मख़्वारिये उम्मत की ख़ुश्बूओं से लबरैज़ इस मजलिस की त़रफ़ से हर माह तक़रीबन एक लाख पच्चीस हज़ार (1,25,000) बीमारों और परेशान ह़ाल लोगों में कमो बेश 4 लाख से ज़ाइद ता'वीज़ात व अवरादे अ़त्तारिय्या रिज़ाए इलाही के लिये बिल्कुल मुफ़्त तक़्सीम किये जाते हैं । याद रहे ! इस मजलिस की बरकतें फ़क़त़ किसी मख़्सूस अ़लाक़े या शहर तक ही मह़दूद नहीं बल्कि पाकिस्तान के सारे सूबों के सेंकड़ों शहरों में सेंकड़ों बस्ते लगाए जा रहे हैं नीज़ पाकिस्तान के इलावा दीगर मुमालिक मसलन साऊथ अफ़्रीक़ा, केनेडा, मॉरेशिस, अमरीका, स्पेन, यूनान, हॉंग कॉंग, साऊथ कोरिया, अफ़्रीक़ा के शहर (मम्बासा, तन्ज़ानिय्या, यूगान्डा), इंगलेंड (के शहर ब्रीड फ़ोर्ड, बर्मिंगहाम), बंगला देश और हिन्द में भी ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या के सेंकड़ों बस्तों की तरकीब है । मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या से वाबस्ता इस्लामी भाई दुखी इन्सानिय्यत की ख़ालिसतन ग़मख़्वारी करते हुवे दा'वते इस्लामी के मदनी पैग़ाम को आ़म करने में मसरूफ़ हैं । ऐ काश ! हम सब को मदनी काम करने का जज़्बा नसीब हो जाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

12 मदनी कामों मे ह़िस्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से बचने, नेकियां करने, अपने दिल में मक्के मदीने की तड़प पैदा करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहते हुवे आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को

www.dawateislami.net

अपना मा'मूल बना लीजिये नीज़ ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये । ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम रोज़ाना "सदाए मदीना" लगाना भी है, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसलमानों को जगाना "सदाए मदीना" कहलाता है । नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसलमानों को जगाना अ़ज़ीम सआ़दत और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सुन्नत है । मन्क़ूल है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आ़दते मुबारका थी कि जब नमाज़े फ़ज्र के लिये अपने घर से तशरीफ़ लाते तो रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये जगाते हुवे आते नीज़ अज़ाने फ़ज्र के फ़ौरन बा'द अगर मस्जिद में कोई सोया होता तो उसे भी जगा देते ।(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने अपने मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन व मुह़िब्बीन और तमाम दा'वते इस्लामी वालों को मदनी इन्आ़मात में से एक मदनी इन्आ़म सदाए मदीना लगाने का भी अ़त़ा फ़रमाया है, बिला शुबा रोज़ाना सेंकड़ों इस्लामी भाई फ़ज्र के वक़्त मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाते और अदाए फ़ारूक़ी पर अ़मल करते हुवे नेकियों का ज़ख़ीरा जम्अ़ करते हैं । आइये इसी ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनते हैं :

जूआरी मज़दूर ताइब हो गया

महाराष्ट्र (हिन्द) के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं मरज़े इस्यां (या'नी गुनाहों की बीमारी) में इन्तिहा दरजे तक मुब्तला हो चुका था । दिन भर मज़दूरी करने के बा'द जो रक़म ह़ासिल होती, रात को उसी से مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शराब ख़रीद कर ख़ूब अ़य्याशी करता, शोर शराबा करता, गालियां तक बकता और वालिदैन व अहले मह़ल्ला को ख़ूब तंग करता, इस के इलावा मैं परले

---

1 ... طبقات کبری، ذکر استخلاف عمر، ۳/۲۶۳

www.dawateislami.net

दरजे का जूआरी व बे नमाज़ी भी था। इसी ग़फ़्लत में मेरी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम ज़ाएअ़ होते रहे आख़िरे कार मेरी क़िस्मत का सितारा चमका। हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से हुई। उन्हों ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की तरग़ीब दिलाई। मुझ से इन्कार न हो सका और मैं हाथों हाथ 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली और बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल भी सुनने को मिले। जिस की बरकत से मुझ जैसा पक्का बे नमाज़ी, शराबी व जूआरी ताइब हो कर न सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाला बन गया बल्कि सदाए मदीना लगाने वाला और दूसरों को मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वाला बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी इनफ़िरादी कोशिश से अब तक 30 इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन चुके हैं। ता दमे तह़रीर मैं एक मस्जिद में मुअज़्ज़िन हूं और ख़ूब मदनी कामों की धूमें मचा रहा हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशाए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

مشكاة المصابيح، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب والسنة، ١/٩٧، حديث:١٧٥

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पानी पीने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले “163 मदनी फूल” से पानी पीने की सुन्नतें और आदाब सुनते हैं :

पहले दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **मुलाह़ज़ा हो :**

❀ ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** पढ़ो और फ़राग़त पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा करो (ترمذی،۳/۳۵۲،حدیث:۱۸۹۲) ❀ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने या इस में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है । (ابوداود،۳/۴۷۴ حدیث:۳۷۲۸) मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़हरीली होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो (या'नी सांस लेते वक़्त ग्लास मुंह से हटा लो), गर्म दूध या चाय को फूंकों से ठन्डा न करो बल्कि कुछ ठहरो, क़दरे (थोड़ी) ठन्डी हो जाए फिर पियो । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 77) अलबत्ता दुरूदे पाक वग़ैरा पढ़ कर ब निय्यते शिफ़ा पानी पर दम करने में ह़रज नहीं ❀ चूस कर छोटे छोटे घूंट से पियें, बड़े बड़े घूंट पीने से जिगर की बीमारी पैदा होती है ❀ पानी तीन सांस में पियें ❀ बैठ कर और सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये ❀ पीने से पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़्सान देह चीज़ वग़ैरा तो नहीं है (اِتحافُ السّادۃ للزّبیدی،۵/۵۹۴) ❀ पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कहिये ❀ पी लेने के चन्द लम्ह़ों के बा'द ख़ाली ग्लास को देखेंगे तो उस की दीवारों से बह कर चन्द क़त़रे पैंदे में जम्अ़ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये । ❀ ग्लास में बचे हुवे मुसलमान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद ख़्वाह म ख़्वाह फैंकना न चाहिये । ❀ मन्क़ूल है سُؤْرُ الْمُؤْمِنِ شِفَاءٌ या'नी मुसलमान के झूटे में शिफ़ा है । (الفتاوی الفقهیة الکبری لابن حجر الهیتمی،۴/۱۱۷،کشف الخفاء،۱/۳۸۴)

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़

﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।** (اَيضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات)

www.dawateislami.net

《5》 कुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

《6》 दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है **:** जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغيب والترهيب ج ٢ ص ٣٢٩، حديث ٣١)

《1》 एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١٠ ص ٢٥٤ حديث ١٧٣٠٥)

《2》 हर रात इबादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा

ग़राइबुल कुरआन सफ़्हा 187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स रात में येह दुआ़ 3 मरतबा पढ़ लेगा तो गोया उस ने शबे क़द्र को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये ।

दुआ़ येह है **:**

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(या'नी ख़ुदाए हलीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**)

www.dawateislami.net